जैनागम स्तोक–वारिधि

(द्वितीय भाग)

सम्पादक

धर्मचन्द जैन

प्रकाशक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

गजेन्द्र निधि की इकाई

(तत्त्वावधान–अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

घोड़ों का चौक, जोधपुर– 342 001 (राज.)

फोन नं. : 0291–2630490

जैनागम स्तोक–वारिधि
(द्वितीय भाग)

सम्पादक
धर्मचन्द जैन

प्रकाशक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड
घोड़ों का चौक, जोधपुर– 342 001 (राज.)
फोन नं. : 0291–2630490

मूल्य : 10 रुपये

प्रथम संस्करण : मार्च 2012

कम्प्यूटर टाईप सेटिंग एवं मुद्रकः
शांता प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
गोल बिल्डिंग, सरदारपुरा
जोधपुर फोन : 0291–2654321

प्रकाशकीय

थोकड़ों का जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। ये हमारे आध्यात्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि में सहायक बनते हैं। इनके अध्ययन से हमें आगमों के अनेक गूढ़ रहस्यों एवं सार तत्त्वों का परिचय प्राप्त होता है। हमारा मन सावद्य-योग से निवृत्त होता है तथा जिनेश्वर भगवन्तों द्वारा प्ररूपित धर्म तत्त्व पर श्रद्धा उत्पन्न होती है, जिससे श्रद्धा में विशुद्धता बढ़ती है।

तत्त्वज्ञान हेतु यद्यपि आगमों में विशद् विवेचन किया गया है। परन्तु आगमों का अध्ययन करना तथा उसे समझना अधिकांश लोगों के लिए अत्यधिक श्रम-साध्य एवं समय-साध्य है। अतः पूर्वाचार्यों ने अनुभव किया कि आगमों में यत्र-तत्र बिखरे हुए महत्त्वपूर्ण तत्त्वज्ञान को थोकड़ों के रूप में प्रस्तुत किया जाय।

आचार्य भगवन्तों एवं ज्ञानी गुरु भगवन्तों का हम पर असीम उपकार है कि उन्होंने तत्त्वज्ञान को थोकड़ों के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर नैतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान व संस्कारों के वर्धापन में विगत 12 वर्षों से सन्नद्ध हैं। तत्त्वज्ञान को थोकड़ों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने हेतु शिक्षण बोर्ड द्वारा आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में ''जैनागम स्तोक वारिधि'' पंचवर्षीय पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

इस पाठ्यक्रम में प्रतिवर्ष 10 थोकड़ों की परीक्षा जनवरी माह में दो प्रश्न-पत्रों के माध्यम से आयोजित की जाती है। प्रथम प्रश्न-पत्र में 5 तथा द्वितीय प्रश्न-पत्र में 5 थोकड़े रखे गये हैं। इस प्रकार 5 वर्षों में 50 थोकड़ों का ज्ञान सहज ही परीक्षार्थियों को हो सकेगा।

युगमनीषी, युगप्रभावक, युगपुरुष, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा., व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, प्रवचन प्रभाकर, आगम रत्नाकर, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं शान्त-दान्त-गंभीर पं. रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त एवं महासती मण्डल की प्रेरणा को थोकड़ों की परीक्षा के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने हेतु शिक्षण बोर्ड कृत संकल्प है। द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रमानुसार सभी थोकड़ें एक ही पुस्तक में उपलब्ध हो, ताकि परीक्षार्थियों एवं साधकों को अध्ययन करने में सुगमता रहे, इसी लक्ष्य से यह पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। शिक्षण बोर्ड की योजना है कि आगे भी पाठ्यक्रमानुसार 10-10 थोकड़ों की पुस्तकें प्रकाशित की जाय।

प्रस्तुत पुस्तक का संकलन-सम्पादन एवं संशोधन श्री धर्मचन्द जी जैन-रजिस्ट्रार ने किया है तथा टाईप सेटिंग का कार्य श्री लायक अली जोधपुर ने किया है। पुस्तक प्रकाशन में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग देने वाले सभी महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

निवेदक

सुशीला बोहरा	**गौतम कवाड़**	**राजेश कर्नावट**
संयोजक	सह संयोजक	सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

सम्पादकीय

'आगम' आप्त पुरुषों द्वारा कथित, गणधरों द्वारा ग्रथित और मुनियों द्वारा आचरित है। आध्यात्मिक जीवन की अनमोल पूँजी आगम है। आगम अत्यधिक विशाल है। विशाल आगमों का सार थोकड़ों के माध्यम से पूर्वाचार्यों एवं स्थविर ज्ञानी गुरु भगवन्तों ने हमें प्रदान किया है। थोकड़ों के माध्यम से तत्त्वज्ञान को समृद्ध बना कर जीवन को समुन्नत किया जा सकता है।

आध्यात्मिक समुन्नति हेतु शिक्षण बोर्ड द्वारा जैनागम स्तोक वारिधि पंचवर्षीय पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया है। प्रत्येक वर्ष में 10-10 थोकड़े पाठ्यक्रम में रखे गये हैं। द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में जो दस थोकड़े निर्धारित किये हैं, उन्हें सरल, व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत पुस्तक में उपलब्ध कराये गये हैं।

प्रथम प्रश्न-पत्र

प्रत्येक साधक को नवतत्त्वों का सम्यक् एवं विशद् ज्ञान होना अनिवार्य है, तभी वह सम्यक्त्व एवं चारित्र गुण को प्राप्त कर पाता है, इसीलिए '**नवतत्त्वों**' की विस्तार से जानकारी दी गई है।

दैनिक जीवन में अत्यन्त उपयोगी '**जयन्ती बाई के प्रश्न**' और भगवान महावीर के उत्तर पठनीय एवं आचरणीय हैं।

जीव के अनादि सम्बन्धों को विस्तृत रूप में बताने वाला 'भव-भ्रमण' का थोकड़ा भी संसार की आसक्ति को तोड़ने में समर्थ है। '**श्वासोच्छ्वास**' जीवन का पर्याय है। यह किन-किन जीवों में कब-कब होता है, इसकी जानकारी '**श्वासोच्छ्वास के थोकड़े**' में दी गई है। श्रमण-निर्ग्रन्थों का आत्मिक सुख, देवों के सुख की तुलना में कितना अधिक एवं महत्त्वपूर्ण है, इसकी जानकारी '**श्रमण-निर्ग्रन्थों के सुख की तुल्यता**' के थोकड़े में प्रस्तुत की गई है।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

दु:ख की आत्यन्तिक मुक्ति हेतु समिति-गुप्ति का ज्ञान एवं पालन अनिवार्य है। साधक का जीवन समिति-गुप्ति से परिपूर्ण बने, इस बात की प्रेरणा '**पाँच समिति तीन गुप्ति**' का थोकड़ा हमें प्रदान करता है।

आत्मा का अभिन्न एवं विशिष्ट गुण ज्ञान है। 5 पाँच, 3 अज्ञान के रूप में ज्ञान के आठ भेद किये हैं। किन-किन जीवों में कितने-कितने भेद मिलते हैं, इसकी नियमा-भजना की जानकारी '**ज्ञान-लब्धि**' के थोकड़े से सहज ही प्राप्त हो जाती है।

नरक, तिर्यंच, मनुष्य व देवगति के जीवों में किन-किन में कितने-कितने जीव के भेद, गुणस्थान, योग, उपयोग एवं लेश्याएँ पाई जाती हैं, इसकी जानकारी '**32 बोल के बासठिये**' से प्राप्त हो जाती है।

भव्य द्रव्य देव, नरदेव, धर्मदेव, देवाधिदेव और भाव देव, इन पाँच प्रकार के देवों का विस्तृत विवेचन '**पाँच देवों के थोकड़े**' से जानकर देवाधिदेव पद को पाने का लक्ष्य निर्धारित किया जा सकता है।

सभी संसारी जीवों को 110 भेदों में समाहित कर उनकी गति-आगति की जानकारी '**छोटीगतागत**' में आगमिक शैली में प्रदान की गई है।

विश्वास है तत्त्वज्ञान के जिज्ञासु भाई-बहिन इन थोकड़ों को सीखकर, समझकर, परीक्षा में भाग लेकर, अपने द्वारा सीखे गये ज्ञान का मूल्यांकन करेंगे। साथ ही अपनी जानकारी को जीवन बनाते हुए अपने-आपको कृतकृत्य कर सकेंगे।

धर्मचन्द जैन
रजिस्ट्रार
अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड
जोधपुर

थोकड़ों की परीक्षा से सम्बन्धित प्रमुख जानकारी इस प्रकार हैं–

1. द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में दो प्रश्न–पत्र होंगे। वर्ग अ का एक प्रश्न–पत्र तथा वर्ग ब का एक प्रश्न–पत्र होगा।
2. दोनों प्रश्न पत्रों की परीक्षा प्रतिवर्ष जनवरी माह में प्रथम अथवा द्वितीय रविवार को निम्नानुसार समय में होगी–
   प्रथम प्रश्न–पत्र: प्रात: 11.30 से 1.30 बजे तक
   द्वितीय प्रश्न–पत्र: दोपहर 2.00 से 4.00 बजे तक
3. द्वितीय वर्ष की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए 50–50 प्रतिशत अंक दोनों प्रश्न–पत्रों में प्राप्त होना आवश्यक है।
4. दोनों प्रश्न–पत्र उत्तीर्ण होने पर ही तृतीय वर्ष के पाठ्यक्रम की परीक्षा में भाग ले सकते हैं।
5. दोनों प्रश्न–पत्र एक साथ उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों में से ही वरीयता सूची तैयार की जायेगी।
6. यथासंभव दोनों प्रश्न–पत्रों की परीक्षा एक साथ दें। कदाचित् कोई एक साथ नहीं दे पायें तो एक–एक प्रश्न–पत्र भी उत्तीर्ण कर सकते हैं।
7. दोनों प्रश्न–पत्र उत्तीर्ण करने वाले परीक्षार्थियों को पुरस्कार निम्नानुसार शिक्षण बोर्ड द्वारा प्रदान किये जायेंगे–

50 से 59.99 अंक तक	प्रमाण पत्र दिया जायेगा, पुरस्कार नहीं दिया जायेगा।
60 से 85 अंक तक	150/– का नकद पुरस्कार व प्रमाण–पत्र
85 से अधिक अंक	200/– का नकद पुरस्कार व प्रमाण–पत्र

8. वरीयता सूची में

प्रथम स्थान पाने वालों को	4000/–
द्वितीय स्थान पाने वालों को	3000/–
तृतीय स्थान पाने वालों को	2000/–

9. प्रश्न–पत्र का प्रस्तावित प्रारूप इस प्रकार रहेगा–

1. बहुविकल्पात्मक प्रश्न (अ,ब,स,द)	10 अंक	10 प्रश्न
2. हाँ/नहीं के प्रश्न	10 अंक	10 प्रश्न
3. जोड़ियाँ मिलान	10 अंक	10 प्रश्न
4. मुझे पहिचानो	20 अंक	10 प्रश्न
5. एक–दो पंक्ति में उत्तर दीजिए	18 अंक	09 प्रश्न
6. तीन–चार पंक्तियों में उत्तर दीजिए	32 अंक	08 प्रश्न
कुल योग	**100 अंक**	**57 प्रश्न**

10. शिक्षण बोर्ड की कक्षा 1 से 12 तक की परीक्षा अब केवल जुलाई माह में ही आयोजित की जायेगी।
11. आवेदन–पत्र व पुस्तक प्राप्ति हेतु तथा परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क करें–

शिक्षण बोर्ड	**धर्मचन्द जैन**	**सुशीला बोहरा**
कार्यालय	रजिस्ट्रार	संयोजक
0291–2630490	9351589694	9414133879

जैनागम स्तोक वारिधि

(द्वितीय वर्ष का पाठ्यक्रम)

		निर्धारित अंक
प्रथम प्रश्न पत्र –		
नव तत्त्व		45
जयन्ती बाई के प्रश्न		20
भव-भ्रमण		10
श्वासोच्छ्वास		15
श्रमण-निर्ग्रंथों के सुख की तुल्यता		10
	कुल अंक	100
द्वितीय प्रश्न पत्र –		
समिति-गुप्ति		30
ज्ञान-लब्धि		25
32 बोल का बासठिया		15
पाँच देव		20
छोटी गतागत		10
	कुल अंक	100

अनुक्रमणिका

	पृष्ठ संख्या
प्रथम प्रश्न पत्र –	
नव तत्त्व	1-65
जयन्ती बाई के प्रश्न	66-71
भव-भ्रमण	72-74
श्वासोच्छ्वास	75-78
श्रमण-निर्ग्रंथों के सुख की तुल्यता	79-80
द्वितीय प्रश्न पत्र –	
समिति-गुप्ति	81-94
ज्ञान-लब्धि	95-105
32 बोल का बासठिया	106-108
पाँच देव	109-114
छोटी गतागत	115-118